शोध पत्र

भाई मरदाना जी का जीवन और रबाब का सफर

एक दिवसिय प्रथम अंतरराष्ट्रीय रबाबी भाई मरदाना जी सम्मेलन

स्थान: निर्मल कुटिया पवित्र वेदी नदीके तट पर सुल्तानपुर- लोधी (पंजाब)|

तारिख:१८/१२/२०२१

शोध निर्देशक

इतिहासकार सरदार
भगवान सिंघ जी 'खोजी'
पटियाला
मो. ९७८१९१३११३

शोधार्थी

स.रणजीत सिंघ अरोरा
'अर्श'
पुणे
मो.९०९६२२२२३

अनुक्रमणिका

- प्रमाण पत्र — पृष्ठ क्रमांक - ३
- आभार ज्ञापन — पृष्ठ क्रमांक - ४
- प्रस्तावना — पृष्ठ क्रमांक - ५
- विषय प्रवेश — पृष्ठ क्रमांक - ७
- परिशिष्ट — पृष्ठ क्रमांक - २३
- शोध पत्र की कुंजी — पृष्ठ क्रमांक - २५
- शोधपत्र के विषयसे संबधित साहित्य का पुनरावलोकन — पृष्ठ क्रमांक - २७
- शोध पत्र का उद्देश्य — पृष्ठ क्रमांक - २८
- शोध पत्र का निष्कर्ष — पृष्ठ क्रमांक - २९
- संदर्भ सुचि — पृष्ठ क्रमांक - ३०

---------X---------

<u>प्रमाण पत्र</u>

मैं प्रमाणित करता हूं कि सरदार रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श' द्वारा भाई मरदाना जी के संबंध में राष्ट्र भाषा हिन्दी में लिखा हुआ शोध पत्र शीर्षक: भाई मरदाना जी का जीवन और रबाब का सफर, मेरे निर्देशन में संपन्न हुआ है| शोध पत्र में प्रस्तुत की गई सभी जानकारी और ऐतिहासिक तथ्य सही है|

मैं अनुशंसा करता हूं कि बहुत ही कम समय में दिये गये विषय पर आप जी ने एक उत्तम प्रारुप में शोध पत्र लिख कर दिनांक १८ दिसंबर २०२१ को सुल्तानपुर-लोधी (पंजाब) में आयोजित प्रथम अंतरराष्ट्रीय रबाबी भाई मरदाना जी सम्मेलन में इस शोध पत्र को टीम खोज-विचार की और से अपना प्रथम शोध पत्र के रुप में प्रस्तुत किया है|

सिक्ख इतिहास और गुरुबाणी पर आप जी द्वारा अनेकों रचनाएं मेरे मार्ग दर्शन में रचित की गई है| भविष्य के लिये मेरी और से अनेकों शुभकामनाएं आप जी को प्रेषीत की जा रही है|

शोध निर्देशक

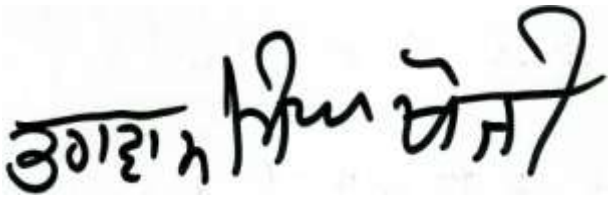

(इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ 'खोजी'|)
तारिख: १८/१२/२०२१
स्थल: सुल्तानपुर-लोधी (पंजाब)

<u>आभार ज्ञापन</u>

इस शोध पत्र कार्य को सम्पन्न करने हेतु संबधित परिपत्र की रचना में मुझे अनेकों व्यक्तियो का सहयोग प्राप्त हुआ है, इन सभी के सहयोग एवं मार्गदर्शन के कारण ही इस शोध पत्र को लिख पाना संभव हो सका है, मैं व्यक्तिगत रुप से इन सभी का कृतज्ञ एवं आभारी हूं|

मैं हमारी खोज - विचार टीम के आधार स्तंभ इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ जी 'खोजी' का विशेष आभार व्यक्त करता हूं कि मुझे विशेष रुप से मेरे इस प्रथम शोध पत्र लेख को रचित करने में उन्होंने मार्गदर्शन कर प्रोत्साहित किया|

मैं विशेष रूप से 'रबाबी भाई मरदाना जी फाउंडेशन' के अध्यक्ष सरदार गुरिंदर पाल सिंघ जी जोसन का भी आभारी हूं कि उन्होंने मुझे इस शोध पत्र को प्रस्तुत करने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया| मैं अपने परिवारजनों और मेरी टीम के सहयोगीयों के साथ - साथ उन सभी का आभारी हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस शोध पत्र लेखन को संपूर्ण करने में सहयोग, प्रोत्साहन, एवं उत्साहवर्धन किया है|

शोधार्थी

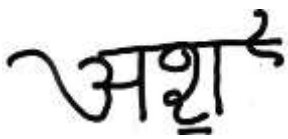

(सरदार रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श' पुणे|)
तारिख: १८/१२/२०२१
स्थल: सुल्तानपुर-लोधी (पंजाब)

प्रस्तावना

स्नेही पाठकों (संगत जी),

वाहिगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह!

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिक्ख जीवनशैली वास्तव में एक विचारधारा है, विचारधाराओं से ही मनुष्य की जिंदगी में परिवर्तन आते है परंतु हम सभी सिक्ख जीवन शैली की विचारधारा को प्रचारित - प्रसारित कर, समझाने में कहीं ना कहीं कम पड़ते है| सिक्ख जीवन शैली की विचारधारा को वर्तमान समय में थोपा जा रहा है| आज के इस सोशल मीडिया के दौर में हमें अपने गुरु के सिक्खों के इतिहास को आने वाली पीढ़ियों से साझा करना चाहिए ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी को अभिमान हो सके कि उनकी विरासत सचमुच में बहुत अमीर है| इस विरासत के अनमोल खजाने की जानकारी ऐसे ही उपक्रमों (उपरालों) के माध्यम से हम नई पीढ़ी तक पहुंचा सकते है| क्या सिक्खों के घर में जन्म लेकर हम सिक्ख है? क्या पांच ककार धारण करने से हम सिक्ख जीवनशैली को जीते हैं? वास्तविकता में सिक्ख जीवन शैली को जीने के लिए हमें अपने स्वर्णिम इतिहास के पृष्ठों को पलटना होगा|

गुरबाणी का फर्मान है:-

बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेन||
(अंग क्रमांक ९५१)

अर्थात् हमारे बुजुर्गों और गुरु सिक्खों का इतिहास, हमारे जीवन में गुणों के खजाने को निश्चित रुप से समृद्धशाली बना देगा| जिसके कारण हमारे पुत्र, सुपुत्र में परिवर्तीत हो जाएंगे| इतिहास के इन स्वर्णिम पृष्ठों

से ही हमारे जीवन में निश्चित परिवर्तन होगा| इस ‘शोध पत्र’ में भाई मरदाना जी द्वारा स्वंय की रबाब के द्वारा रचित १९ रागों की धुनों ने और गुरु पातशाह जी के मुखारविंद से उच्चारित गुरुबाणी ने गुरमत संगीत को जन्म देकर आम जन समुदाय को किर्तन की दात बक्शी है| इस संपूर्ण स्वर्णिम इतिहास को इस 'शोध पत्र' के द्वारा संक्षेप में प्रस्तावित किया गया है|

---------x---------

विषय प्रवेश

सिक्खों के स्वर्णिम इतिहास में भाई मरदाना जी जैसा भाग्यशाली कोई विरला ही होगा, धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' का सबसे अधिक सानिध्य (लगभग ५० वर्षो तक) भाई मरदाना जी को प्राप्त हुआ था| प्रसिद्ध सिक्ख इतिहासकार भाई कान्ह सिंघ जी के अनुसार भाई मरदाना जी का जन्म ६ फरवरी सन् १४५९ में हुआ था| भाई मरदाना जी अपने माता - पिता की सातवीं संतान थे, इस परिवार के पहले ६ बच्चे अकाल चलाना (स्वर्गवास) कर गए थे, इसलिए भाई मरदाना जी का नाम 'मर - जाणा' रखा गया था परंतु जब भाई साहिब गुरु पातशाहा जी की शरण में आए तो गुरु पातशाहा जी ने आपका नाम 'मरदा - ना' रख दिया था, इसलिये आप जी का नाम भाई मरदाना के नाम से प्रचलित हुआ था| भाई मरदाना जी को भाई दाना जी के नाम से भी संबोधित किया जाता था| आप जी के पिता जी का नाम भाई बदरा जी और माता जी का नाम माइ लक्खो जी था| भाई मरदाना जी मरासी परिवार के थे| यह वो मुस्लिम परिवार था जो राजा - महाराजाओं के दीवान में उनकी उसतत्त में गाकर अपने परिवार का भरण - पोषण करते थे| संगीत सुर और ताल भाई मरदाना जी को विरासत में प्राप्त हुये थे| भाई मरदाना जी एक संगीतकार और गायक थे, विश्व प्रसिद्ध गायक तानसेन के दादा जी भाई हरिदास जी, भाई मरदाना जी के शिष्य थे| भाई मरदाना जी रबाबी कलां के समस्त गुणों से परिपूर्ण थे, इसी कारण से हरिदास जी ने भाई मरदाना जी को अपना गुरु बनाया था|

भाई मरदाना जी के जीवन को धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' ने गुरबाणी के आध्यात्मिक और राग - रस में सराबोर कर एक अनोखा आयाम प्रदान किया था| भाई मरदाना जी के कर्मों पर रश्क होता है कि उन्हें धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' के जैसा

मुर्शीद प्राप्त हुआ था| गुरु पातशाहा जी के सानिध्य में रहकर लोगों की उसतत्त गाने वाला मरासी भाई मरदाना जी, रबाबी भाई मरदाना जी में परिवर्तित हो चुका था| भाई मरदाना जी गृहस्थाश्रम में जीवन व्यतीत कर रहे थे और उन्हें तीन संतानों की प्राप्ति भी हुई थी उनके दो सुपुत्र सजादा एवं रजादा नाम से थे उन्हें एक कन्या रत्न की भी प्राप्ति हुई थी|

इतिहास में आता है कि धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' की भाई मरदाना जी से प्रथम मुलाकात सन् १४८० में तलवंडी (पाकिस्तान) में हुई थी| भाई मरदाना जी तलवंडी के ही मूल निवासी और गुरु पातशाहा जी के साथी थे| इन दोनों का साथ भाई मरदाना जी के अंतिम समय सन् १५३४ तक रहा था| धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' ने तलवंडी में ही कीर्तन करना प्रारंभ कर दिया था| आप जी किरत, (कष्ट) और कीर्ति को जोड़ने का अभूतपूर्व कार्य कर रहे थे| आप जी को भी एक ऐसे साथी की तलाश थी जिसके पास सुर, राग और ताल हो, ताकि उनके मुखारविंद से उच्चारित बाणी को सही संगीतमय ढंग से लयबद्ध किया जा सकें| जब गुरु पातशाहा जी को एक बार तलवंडी में ही रबाब की मधुर धुन सुनाई पड़ी तो आप जी स्वयं भाई मरदाना जी के पास चल कर गए और आत्मीयता से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? भाई मरदाना जी ने उत्तर दिया कि मेरा नाम दाना है तो उस समय गुरु जी ने फर्माया था कि तुम्हें राग,ताल और लय की अच्छी समझ है,यदि तुम साथ दो तो हम मिलकर उस प्रभु - परमेश्वर की उसतत्त कर, लोक कल्याण कर, हम इस दिन - दुनिया का उद्धार कर सकते हैं| उस समय भाई मरदाना जी ने गुरु पातशाहा जी को उत्तर दिया कि मैं जाति से डोम (मरासी) हूं और आप बेदी वंश के कुलदीपक है, हमारा साथ कैसे संभव है? उस समय गुरु जी ने भाई मरदाना जी की बांह

पकड़ कर कहा था नहीं मरदाना! तु तो मेरा भाई है! उस समय भाई मरदाना ने कहा कि हम तो अपना और परिवार का भरण पोषण करने हेतु गाते है| अपनी भूख मिटाने के लिए हमें गाना ही पड़ता है, उस समय गुरु पातशाहा जी ने मुस्कुराकर वचन किए थे कि, है मरदाना! जो प्रभु - परमेश्वर की भक्ति में लीन हो जाते हैं तो क्या उनको रोटी - पानी की भूख रह जाती है? गुरु पातशाहा जी ने वचन किये कि तुम नमाज क्यों पढ़ते हो? तुम रोजा क्यों रखते हो? तो उस समय भाई मरदाना जी ने वचन किये थे कि खुदा के लिए मैं ऐसा करता हूं तो गुरु जी ने वचन किए कि यदि तुम सब कुछ खुदा के लिये करते हो तो खुदा संगतों के ह्रदय में निवास करते हैं, खुदा तो संतों की संगत में ही निवास करते हैं| तुम मेरा साथ दो और मेरे साथ चलो, तुम मधुर रबाब की धुन बजाओ और मैं गाऊंगा, हम मिलकर उस प्रभु - परमात्मा का गुणगान करेंगे| गुरु पातशाहा जी ने वचन किये कि यह मेरा वादा है, तुम्हारे घर में किसी भी वस्तु की कोई कमी नहीं रहेगी| भाई मरदाना जी ने गुरु पातशाहा जी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और भाई मरदाना जी गुरु पातशाहा जी के सानिध्य को पा गये थे|

धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' के मुखारविंद से उच्चारित बाणी और भाई मरदाना जी की रबाब से निकली मधुर संगीत की धुन ने आध्यात्मिक कीर्तन के साथ - साथ गुरमत संगीत को भी जन्म दिया था| वर्तमान समय में गुरमत संगीत आज एक विशाल वट के वृक्ष के रूप में संसार में स्थापित हो चुका है परंतु इस गुरमत संगीत का प्रारंभ गुरु पातशाहा जी और भाई मरदाना जी की जोड़ी से हुआ था|

भाई मरदाना जी की जीवन शैली, सादा जीवन और उच्च विचारों वाली थी| वो निश्चल, निर्भय, निरकपट, सुरमा,वक्त के साथ लड़ने और मरने

को तैयार, दुखों में भी अडिग रहकर गुरु पातशाहा जी के साथ स्मित हास्य के साथ चलने वाले, राग विद्या में जिंहे महारत हासिल थी और गुरु पातशाहा जी का ऐसा साथी जिसने गुरु जी के प्रत्येक वचन को सिर माथे पर रखकर माना था| भाई मरदाना जी के जीवन से सीखने को मिलता है कि गुरु के बहाने में रहकर कैसे जिंदगी बितानी है? कैसे गुरु के हुकुम को मानना है? कैसे गुरु के हुक्म अनुसार सेवा करनी है? कैसे गुरु के बताये हुए मार्ग पर चलना है? और कैसे गुरु की बख्शीश प्राप्त करनी है? यह सभी महत्वपूर्ण पहलू हम भाई मरदाना जी के जीवन से सीख सकते है| भाई मरदाना जी की जीवन तपस्या बहुत कुछ सिखाती है जैसे कि धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' ने भाई मरदाना जी को तीन उपदेश दिये थे| १.केशो को कटवाना नहीं है| २. ब्रह्म मुहूर्त से पहले जागकर सिमरन करता है और ३. आए - गए सभी साधु - संत और जरूरतमंदों की आवश्यकता अनुसार सेवा करनी है| भाई मरदाना जी ने इन उपदेशों को स्वयं आत्मसात किये और इन्हीं उपदेशों को आप जी ने संगतों को भी दृढ़ करवाये थे|

इतिहास में आता है कि जब गुरु पातशाह जी अपनी प्रथम उदासी यात्राएं कर रहे थे तो एक नगर में उन्हें लोगों ने बहुत सारा धन, सामान और वस्त्र भेंट स्वरूप प्रदान किए गये थे| भाई मरदाना जी ने यह सब वस्तुएं एकत्र कर गुरु जी के सम्मुख रख दी थी परंतु गुरु जी ने इन सभी वस्तुओं को स्वीकार करने से इंकार कर दिया था और वचन किये थे कि परमात्मा के मार्ग पर चलते हुये माया रूपी रुकावटों से दूर रहना ही उत्तम है| धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' और भाई मरदाना जी ने अपने जीवन काल में चार उदासी यात्राएं की थी| इन यात्राओं में आप जी ने ३६००० माइल्स तक की पैदल यात्राएं की थी| उस समय लोक -कल्याण के लिए की गई यह यात्राएं दिग्विजय

यात्राओं के रूप में जानी जाती है| इन उदासी यात्राओं में भाई मरदाना जी को अनेकों कष्टों से रू - बरू होना पड़ा था| कई - कई दिनों तक उन्हें भूखा रहना पड़ा था| इन कठिन मार्गों पर चलते हुए आप हमेशा धन् करतार की धुन में ही रमे रहते थे, आप जी ने गुरमत संगीत के १९ रागों में गुरुबाणी को गाकर गुरु घर के प्रथम किर्तनियें होने का मान प्राप्त किया था| भाई मरदाना जी ने स्वयं कष्ट सहकर,हमें कष्टों को सहन करने की महत्वपूर्ण सीख दी है|

इन उदासी यात्राओं को करते हुए एक बार भाई मरदाना जी ने गुरु जी से कहा कि आपकी तपस्या बहुत कठिन है, मैं इस तपस्या में आपका साथ निभाने में स्वयं को असमर्थ पाता हूं| उस समय गुरु जी ने वचन किए थे कि आप सहजता से हमारे सानिध्य में रहिये, तब भाई मरदाना जी ने उत्तर दिया था कि गुरु पातशाह जी यह तभी संभव है कि जब आप मुझे अपने जैसा धीरज प्रदान करें, जैसे आपको भूख और प्यास नहीं लगती है, वैसे ही मुझे भी भूख और प्यास ना लगे| जिस अवस्था में आप जी विचरण करते हैं उसी सहज अवस्था में आप जी मुझे भी अपने साथ रखें नहीं तो मुझे पुनः घर जाने की आज्ञा प्रदान करें| गुरु पातशाह जी ने अत्यंत प्रसन्नता से कहा कि शाबाश मरदाना! आपने आज मुझसे एक अच्छी दात को मांगा है, भाई मरदाना जी ने गुरु पातशाह जी से हमेशा धीरज, सब्र,और संतोष ही मांगा था| गुरु पातशाहा जी के साथ रहकर भाई मरदाना जी ने बाबर से भी मुलाकात की थी और संगला द्वीप के राजा शिवनाब से भी मुलाकात की थी, मलक भागो जैसे उस समय के सबसे अमीर व्यक्ति से भी भाई मरदाना जी की मुलाकात हुई थी,चौधरी सालसराय जैसे महान जौहरी ने भाई मरदाना जी को गुरु पातशाहा जी के हीरे के दर्शन करने के १०० रु. दे दिये थे, ऐसा विशुद्ध हीरा देखने को नहीं मिलता है| ऐसे अमीर लोगों की

संगत में रहकर भी भाई मरदाना जी ने किसी से कुछ नहीं मांगा था, उन्होंने जब भी मांगा तो अपने गुरु पातशाहा जी से मांगा था और मांगा क्या था? धीरज, सब्र और संतोष! एक बार भाई मरदाना जी ने गुरु पातशाह जी से कहा कि आप में और मुझ में कोई अंतर नहीं है कारण कि आप खुदा के डोम (मरासी) और मैं आपका डोम (मरासी) हूं| आप जी ने खुदा को प्राप्त किया और मैंने आप जी को प्राप्त किया है,गुरु पातशाह जी मेरा आपसे निवेदन है कि आप मुझे कभी मत छोड़ना,ना इस लोक में ना ही परलोक में, उसी समय गुरु पातशाह जी ने वचन किए थे कि:-

जिथै मेरा वासा,उथै तेरा वासा!

इन उदासी यात्राओं में भाई मरदाना जी ने कौड़ियों की सेवा कर कोडियों के दुख दूर करें| सभी जरुरतमंद और दुखी लोगों की तन्मयता से सेवा की थी अर्थात दुख में सुख में हर जगह आप जी ने गुरु पातशाहा जी के साथ रहकर अपने जीवन को सफल किया था| भाई मरदाना जी मुसलमान फकीर होकर भी गुरु पातशाहा जी के साथ मंदिरों में दर्शन करने गए, जगन्नाथ पुरी के मंदिर में आप जी ने धनाश्री राग के अंतर्गत सृष्टि के रचयिता की आरती के गायन में अपनी रबाब की मधुर धुन प्रस्तुत की थी| इन उदासी यात्राओं के दौरान जब गुरु पातशाह जी भाई मरदाना जी के साथ बगदाद में गए और वहां पर गुरु जी ने अपने मुखारविंद से उच्चारण किया:-

पाताला पाताल लख आगासा आगास ||
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ||
(अंग क्रमांक ५)

अर्थात् गुरु पातशाहा जी ने आम लोगों की धारणा सात पाताल व सात

आकाश की है (कुरान शरीफ अनुसार) का खंडन करते हुये कहा कि सृष्टि की रचना में पाताल - दर -पाताल लाखों है एवम् आकाश - दर - आकाश भी लाखों है| इस बाणी को सुनने के पश्चात भी भाई मरदाना जी ने कुरान शरीफ का उदाहरण देकर गुरु पातशाहा जी का विरोध नहीं किया था| आप जी ने कभी भी गुरबाणी का विरोध नहीं किया,जब मक्का में खुदा के घर की और पैर कर गुरु जी आराम कर रहे थे तो भी उन्होंने इसका विरोध नहीं किया, जिसे वारां: भाई गुरदास जी की में इस तरह से अंकित किया गया है:-

जा बाबा सुता राति नो वलि महराबे पाइ पसारी||
जीवणि मारी लति दी केहड़ा सुता कुफर कुफारी?

दूसरों ने विरोध किया परंतु भाई मरदाना जी ने गुरु के हुक्म में ही स्वयं को रखा था, आप जी हमेशा गुरु की रजा में राजी रहें| गुरु पातशाहा जी ने भी भाई मरदाना को भाई कहकर अपना रिश्ता भाइयों वाला रखा था अर्थात् ऊंच - नीच का प्रबल विरोध किया था| जिसे गुरबाणी में इस तरह से अंकित किया गया है:-

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु||
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस||
(अंग क्रमांक १५)

अर्थात् निम्न में जो निम्न जाति के लोग है और फिर उनमें भी जो अति निम्न प्रभु भक्त हैं| गुरु पातशाहा जी फर्माते हैं कि हे निरंकार! उनकी मेरे साथ मुलाकात करवाओ, माया और ज्ञानाभिमान के कारण जो बडे हैं उनसे मेरी क्या तुलना हो सकती है?

पूरी दुनिया के लोगों को गुरबाणी के साथ जोड़कर भाई मरदाना जी की रबाब ने जन - जागृति की और एक परमेश्वर के अर्थ को समझाया था|

भाई मरदाना जी का धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' से किये हुए सभी वार्तालाप अत्यंत महत्वपूर्ण है| जैसे कि भाई मरदाना जी ने जब गुरु जी से रागों के महत्व के संबंध में पूछा तो गुरु जी ने उत्तर दिया था कि राग तो सभी अच्छे होते हैं परंतु सबसे उत्तम वो ही राग है, जिस के कारण आप उस प्रभु - परमेश्वर से जुड़ जाते हैं| जब भाई मरदाना जी ने पूछा कि संसार क्या है? तब गुरु पातशाह जी ने उत्तर दिया था कि संसार सागर है, गुरबाणी नाव है और इस नाव को पार लगाने वाला नाविक गुरु है| जब भाई मरदाना जी ने गुरु पातशाह जी से पूछा कि सबसे अच्छा समय कौन सा होता है? तो उस समय गुरु पातशाह जी ने उत्तर दिया था कि वो ऋतु और महीने ही सबसे उत्तम होते हैं, जिसमें परमात्मा को हम याद रखते है| इन वार्तालाप ने इस तरह के अनेकों उदाहरणों से हमें गुरु पातशाहा जी ने जीवन में मार्गदर्शन प्रदान किया है| जरूरत, निर्भयता और बेबाकपना को भाई मरदाना जी ने गुरु पातशाह जी से ही आत्मसात किया था|

गुरुबाणी में अंकित है:-

सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला||
(अंग क्रमांक ७२३)

अर्थात् बाबा नानक जी सच की बाणी सुना रहे है और केवल सत्य ही सुना रहे है, अब सत्य बोलने की ही बेला है| उपरोक्त बाणी के अनुसार भाई मरदाना जी का स्वभाव परिपक्व हो गया था, तीर्थ स्थानों पर तीर्थ यात्रियों की जिस तरहां से लूट - खसोट की जाती थी, उस पर आप जी ने अनेकों बेबाक टिप्पणियां की थी| आप जी ने महंतों के अंहकारों को और नकली पीर - फकीरों के आडंबरों का भी भंडाफोड़ किया था| एक बार तो उनकी बेबाक टिप्पणियों के कारण उन पर हमला भी किया

गया था परंतु असली महंत और पीर - फकीर क्या होते है? इस बारे में गुरु पातशाह जी ने उपदेशित कर इस विवाद को शांत किया था|

इन उदासी यात्राओं के दौरान प्रत्येक स्थान पर रबाब की धुन और बाबा गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' के शबद् रूपी कीर्तन को सुनकर लोग दौड़े चले आते थे| दुख में सुख में हर जगह आप जी ने गुरु पातशाहा जी के साथ रहकर अपने जीवन को सफल किया था|

जब इन उदासी यात्राओं के दौरान गुरु पातशाहा जी, भाई मरदाना जी के साथ हरिद्वार की धरती पर गए तो वहां पर एक अहंकारी महंत कई तरह के आडंबरों को अंजाम दे रहा था| इस महंत के पास भाई मरदाना जी को गुरु पातशाहा जी ने भेजा एवं कहा कि चढ़ते हुए सूरज के स्थान पर खड़े होकर, इस महंत से आग लेकर आओ! भाई मरदाना जी ने सत् - वचन कह कर उत्तर दिया और चढ़ते हुए सूरज के स्थान पर खड़े होकर उस महंत से आग की मांग की थी, उसी समय वो महंत एक जलती हुई लकड़ी लेकर भाई मरदाना जी पर हमला करने हेतु दौड़ पड़ा था| भाई मरदाना जी दौड़ते - दौड़ते गुरु पातशाहा जी के चरणों में आ गये थे, जब गुरु जी के पास आये तो गुरु पातशाहा जी ने उस महंत से पूछा कि क्या कारण है? जो तुम जलती हुई लकड़ी लेकर इस पर हमला कर रहे हो, मैंने तो इसे तुम्हारे पास आग लाने के लिए भेजा था, उस महंत ने उत्तर दिया मैं तुम्हें आग देने नहीं आया, अपितु मैं तो आग लगाने आया हूं गुरु पातशाहा जी ने उत्तर दिया कि हरि के द्वार पर यदि आग लगाने वाले बैठे हैं तो इसे बुझाएगा कौन? क्या कारण है? ऐसा कि, तुम भाई मरदाना पर हमला करने चले आये हो, उसने उत्तर दिया कि तुम्हारे साथी ने मेरा धर्म भ्रष्ट कर के रख दिया, गुरु जी ने पूछा वो कैसे? तो उसने उत्तर दिया इसने चढ़ते हुए सूरज के स्थान पर

खड़े होकर आग की मांग की, जिससे इसकी परछाई मेरे चौके पर पड़ गई और मैं ब्रह्म मुहूर्त से कर्मकांड कर रहा हूं और इसने मेरे समस्त क्रिया - कर्मों का नाश करके रख दिया है| सदगुरू जी ने भाई मरदाना जी को वचन कर कहा कि आप जी को कितनी बार समझाया कि आप ऐसे लोगों के पास मत जाया करो, इनका धर्म इतना नाजुक है कि जो तुम्हारी परछाई से ही टूट गया है| आप का तो कुछ नहीं बिगड़ा, इसके पूरे जीवन की तपस्या समाप्त हो गई| विचार करो यदि इसका धर्म जीवन के अंतिम समय में टूट जाता तो इसका जीवन ही व्यर्थ हो जाता था| जिस व्यक्ति की सारी जिंदगी धर्म कमाते गुजर गई और अंतिम समय में उस व्यक्ति का धर्म टूट जाए तो क्या होगा? उस महंत को गुरु पातशाहा जी की गहराई से की हुई बात समझ आयी, वो कैसा धर्म? जो केवल परछाई से ही टूट जाए| गुरु पातशाहा जी ने भाई मरदाना जी की धुन से ऐसे अद्भुत सिक्ख योद्धाओं का निर्माण किया जो एक - एक सिक्ख सवा लाख के बराबर थे| इस रबाब की धुन का ही कमाल था जो भाई सती दास जैसे सिक्ख तैयार हुये, जिनके आरे से दो टुकड़े कर दिए पर धर्म नहीं टूटा! ऐसे सिक्ख भाई दयाला जी जैसे तैयार हुये जो उबलती देग में उबल गए पर अपना धर्म नहीं छोड़ा, भाई मती दास जी जैसे सिक्ख जो रुई में लपेटकर जल गये पर अपना धर्म नहीं छोड़ा, ऐसे सिक्ख अस्तिव में आये जिंहोने बंद - बंद कटवा लिये, खोपड़ियां उतरवा ली परंतु धर्म पर अडिग रहें| मांओं ने बच्चों के टोटे - टोटे करवा कर झोलियों में डलवा लिए पर धर्म नहीं टूटा, चक्की में पीस दिए गए पर धर्म पर अडिग रहे| भाई मरदाना की रबाब ने दुनिया के अनेकों लोगों को प्रभु - परमेश्वर से जोड़ने का काम किया है, यही वो रबाब है जिसने कर्मकांड़ों पर करारा प्रहार किया,जिसे गुरबाणी में इस तरह से अंकित किया है:-

कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि||
कारी कढी किआ थीऐ जाँ चारे बैठीआ नालि||
(अंग क्रमांक ९१)

अर्थात् गुरु पातशाहा जी फर्माते है कि हे पंडित! तेरे शरीर रुपी घर में कुबुद्धी का निवास है,जो डोमनी है, हिंसा का भी निवास है, जो कसाइन है, जो पराई निंदा करती है, वो सफाई का कार्य करती है और क्रोध चंडाल के रुप में रहता है| यह सभी वृत्तियाँ तेरे शुभ गुणों को लूट रही है, लकीरें खींचने का तुझे क्या लाभ है? जब यह चारों ही तेरे साथ विराजमान है|

यही वो रबाब थी, जिसने कोड़ा राक्षस को भी बंदा बना दिया था, यही वो रबाब थी जिसने ठगों की बस्ती में जाकर ठगों को भी ठग लिया था| जब भाई लालो जी को संबोधित कर गुरु पातशाहा जी ने बाबर को जाबर कहा, जिसे गुरबाणी में इस तरह अंकित किया गया है:-

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो||
पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो||
(अंग क्रमांक ७२२)

अर्थात् हे भाई लालो! मेरे मालिक - प्रभु की जैसी बाणी मुझे आई है, वैसा ज्ञान मैं तुझे वर्णन कर रहा हूं| पाप एवम् जुल्म की बारात लेकर बाबर काबुल से आया है और जोर - जुल्म से भारत की हुकूमत रुपी कन्या का दान मांग रहा है|

उस कठिन समय में भी इसी रबाब ने अपनी धुन को प्रस्तुत किया था और बाबर के कहर को अपनी रबाब की धुन से उत्तर दिया था, इतनी

जरूरत थी उस भाई मरदाना जी की कारण रबाब बजाने वाला भाई मरदाना अत्यंत ऊंची अवस्था का मालिक था|

दुनिया के बड़े - बड़े गुणी पुरुष शराब के प्याले में डूब कर रहे गये| डॉक्टर इकबाल मोहम्मद इकबाल, शिव कुमार बटालवी जैसे शायर को शराब के नशे ने डुबो दिया परंतु भाई मरदाना जी के रचित धन्य - धन्य 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' में अंकित दोनों शबद की रचनाओं ने एक अलग आयाम दिया हैं| धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' ने वचन किए कि मैं दुनिया को एक ऐसा कलाकार, एक ऐसा कीर्तनियां, एक ऐसा मरदाना, एक ऐसा गुणी पुरुष देकर जा रहा हूं जो दुनिया को केवल दुनिया के शराब के प्याले में नहीं डूबायेगा अपितु वो आप भी रब के नाम की खुमारी में रहेगा और भूले हुए लोगों को भी रब के नाम की खुमारी की मस्ती से जुड़ेगा| बिहागड़ा राग में भाई मरदाना जी के उच्चारित दोनों शबद् वर्तमान समय को भी सारगर्भित करते हैं, जिसे इस तरह से अंकित किया गया है:-

सलोकु मरदाना १||
कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु||
क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अंहकारु||
मजलस कूडै लब की पी पी होइ खुआरु||
करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु||
गुण मंडे करि सीलु घिउ सरमु मासु आहारु||
गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाहि बिकार ||
(अंग क्रमांक ५५३)

अर्थात् यह कलयुग कामवासना की मदिरा से भरा हुआ मदिरालाय है, जिसे मन पीने वाला है| क्रोध का कटोरा मोह से भरा हुआ है, जिसे

अंहकार पिलाने वाला है| झूठे लोभ की महफिल में कामवासना की मदिरा पी - पीकर जीव बर्बाद हो रहा है| इसलिये हे जीव! शुभ कर्म तेरा पात्र और सत्य तेरा गुड़, इससे तु सत्य नाम की श्रेष्ठ मदिरा बना| गुणों को अपनी रोटी, शीलता को अपना घी एवम् लल्जा को खाने हेतु मांसाहार बना| हे नानक! ऐसा भोजन गुरुमुख बनने से ही प्राप्त होता हैं, जिसे खाने से सभी पाप - विकार मिट जाते हैं||

इसी प्रकार से भाई मरदाना जी द्वारा रचित दुसरा शबद् धन्य - धन्य गुरु श्री ग्रंथ साहिब जी में इस तरह से अंकित है:-

मरदाना १ ||
काइआ लाहणि आपु मदु मजलस त्रिसना धातु ||
मनसा कटोरी कूड़ि भरी पीलाए जमकालु ||
इतु मदि पीतै नानका बहुते खटिअहि बिकार ||
गिआनु गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ||
नानकु इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ||
काँयाँ लाहणि आपु मदु अंम्रित तिस की धार ||
सतसंगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी
अंम्रित भरी पी पी कटहि बिकार ||
(अंग क्रमांक ५५३)

अर्थात् मनुष्य का तन एक घड़ा है, अहम मदिरा है और तृष्णा एक महफिल है| मन के मनोरथ और वासनाओ की कटोरी झूठ से भरपूर है, इस कटोरी को यमदूत पिलाने वाला है| हे नानक! इस मदिरा को पीने से जीव अत्याधिक पाप - विकार कमा लेता है| ब्रहम - ज्ञान को अपना गुड़, प्रभु - भजन को अपनी रोटी और प्रभु भय को खाने के लिये अपना मांसाहार बना| हे नानक! वो भोजन ही सत्य है, जिसके करने से सतनाम ही मनुष्य के जीवन का आधार बनता है| यदि यह शरीर घड़ा हो, आत्म

- ज्ञान की मदिरा हो तो नामामृत उसकी धारा बन जाती है| यदि सतसंगत से मिलाप हो, प्रभु में सुरति की कटोरी जो नामामृत से भरी हुई है,उसे पी - पीकर, पाप - विकार मिट जाते है|

भाई मरदाना जी सन् १५३४ में अकाल चलाना (स्वर्गवास) कर गए थे| अपने अंतिम समय में गुरु पातशाहा जी ने उन्हें वचन किए थे कि भाई मरदाना जब रबाब की तार टूटती है तो तुम लगा देते थे और जब ढीली होती थी तो उसे कस लेते थे परंतु अब जो यह तार टूट रही है, यह प्रभु के हाथ में है| 'टूटी तंत रबाब की' यह रबाब की तार रब के हाथ में है, गुरु पातशाहा जी ने वचन किए कि भाई मरदाना तुम्हारे अकाल चलाना (स्वर्गवास) करने के पश्चात क्या मैं तुम्हारी देह को जल प्रवाह करूं? या अंतिम संस्कार करूं? या सुपुर्द ए खाक करूं? अपने इस अंतिम समय में भाई मरदाना जी ने भाव - विभोर होकर कहा था कि वाह बाबा इस अंतिम समय में भी देह के संबंध में वार्तालाप! गुरु जी ने प्रसन्न होकर कहा कि हम तुम्हारी देह को सुपुर्द ए खाक करेंगे, तुम्हारी कब्र बना कर वहां पर तुम्हारे नाम का पत्थर लगा देंगे| दुनिया तुम्हारी कब्र की पूजा करेगी, भाई मरदाना जी ने वचन किये कि बाबा जी पहले आपने मेरी बांह पकड़ी, मुझे कीर्तन की दात बक्शी, आप की संगत, आप के चरण और आप के शबद् के कारण मैं आज चमड़े की कब्र से पारायण कर रहा हूं परंतु आप जी मुझे चमड़े की कब्र से निकाल कर,पत्थर की कब्र में मत बसा देना, जहां पर आप निवास करोगे वहीं पर मुझे भी अपने चरणों में निवास बक्श देना| संपूर्ण जीवन में मुझे अपने साथ रखा और अब अलग करने की बात कर रहे हो! गुरु पातशाहा जी ने मुस्कुरा कर कहा कि जा भाई मरदाना:-
जिथै मेरा वासा, औथे तेरा वासा! इस गुरुबाणी में इस तरह से भी अंकित किया गया है:-

अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले है सारिंगपानी ||

(अंग क्रमांक ९६९)

अर्थात् अब हमारा प्रभु से मिलाप हो गया है और ह्रदयरुपी सिंहासन पर चढ़कर उसकी संगत पा गये है|

भाई मरदाना जी ने अपनी अंतिम श्वास धन्य - धन्य गुरु पातशाहा जी के गोद में ली थी| इतिहास में आता है कि भाई मरदाना जी की देह को रावी / खुर्रम नदी के जल में प्रवाहित किया गया था और पश्चात भाई मरदाना जी के सुपुत्र सजादा और रजादा को तलवंडी से बुलवाया गया था| जब सजादा गुरु जी के पास पहुंचा और देखा कि बाबा जी के साथ सिक्ख सेवादार जुड़ कर बैठे हैं परंतु सजादा अपनी अधीर आंखों से अपने बाबा, अपने अब्बू को खोज रहा था| गुरु पातशाहा जी के पास ही भाई मरदाना जी की रबाब रखी हुई थी, सजादा देखता है कि दाएं और बाएं कहीं भी उसे अपने अब्बू दिखाई नहीं पड़ रहे थे, उसने अधीरता से गुरु पातशाहा जी से पूछा कि बाबा जी मेरे अब्बू कहां है? गुरु पातशाहा जी ने वचन कर कहा सजादा तेरे अब्बू अपने घर चले गये है उसने आश्चर्यचकित होकर पूछा हमारा कौन सा अपना घर? इस पर बाबा जी ने वचन किए कि यह घर तो सब ने छोड़ना है, तेरा अब्बू तो खुदा के घर चला गया है| सजादा की आंखें भर आई थी, गुरु पातशाहा जी ने वचन किये सजादा रोना मत, यदि कोई अपने घर जाता है तो इसमें कैसा रोना? जो घर से गुमराह हो जाते हैं उनके लिए रोया जाता है| बाबा जी ने वचन कर कहा कि क्या हम तुम्हें सरोपा प्रदान करें? कौन सा सरोपा तुम्हें चाहिये? दिन का चाहिये या दुनियावी चाहिये! उस सुपुत्र सजादा ने नतमस्तक होकर उत्तर दिया गुरु पातशाहा जी वो ही सरोपा मुझे भी प्रदान करो जो मेरे अब्बू को आप जी ने प्रदान किया था| गुरु

पातशाहा जी ने स्नेह पूर्वक सजादा के हाथों में रबाब थमा दी और कहां सजादा रबाब की धून छैड़, हम दोनों मिलकर उस अकाल पुरख की उसतत्त करते हैं| इस तरह से गुरु पातशाहा जी ने भाई मरदाना जी को नवाजा था| अफसोस! जिस भाई मरदाना जी को गुरु पातशाहा जी ने चुना था उसे हमने कभी सम्मान नहीं दिया, वो भाई मरदाना जी धन्य थे, जो गुरु पातशाहा जी के सजल नयनों में निवास करते थे, वो भाई मरदाना जी धन्य थे, जो गुरु पातशाहा जी के लबों की शान थे, वो भाई मरदाना जी धन्य थे, जो गुरु पातशाहा जी के ह्रदय में निवास करते थे| उस भाई मरदाना जी को सादर नमन है! जिन्होने धन्य - धन्य 'श्री गुरु ग्रंथ साहब जी' में अपना नाम अंकित किया है|

<u>विशेष नोट:</u>

१. गुरु 'श्री ग्रंथ साहिब जी' के पृष्ठों को गुरुमुखी में सम्मान पूर्वक 'अंग' कहकर संबोधित किया जाता है|

२. गुरुबाणी के पद्यों का हिंदी अनुवाद 'गुरुबाणी सर्चर ऐप' को मानक मानकर किया गया है|

३. मेरे इस प्रथम शोध पत्र को लिखने में यदि कोई त्रुटि हो तो अंजान बच्चे समझकर बक्शना जी, 'संगत बक्शनहार है'|

भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरु करतारु ||
(अंग क्रमांक ६१)

अर्थात् सभी गलती करने वाले है, केवल गुरु और सृष्टि की सर्जना करने वाला ही अचुक है|

<u>वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह!</u>

परिशिष्ट

१. मीरास अरबी भाषा का शब्द है और इसी शब्द से मिरासी शब्द की उत्पत्ति हुई है| मिरास अर्थात संभालने वाला यानिकि किसी खानदान की वंशावली को अपने जहन में रखकर उस पर कविताएं लिखकर उस वंश की कीर्ति और यश को बढ़ाने का कार्य करने वाला व्यक्ति, यदि विश्लेषण करें तो कविताओं के माध्यम से मुंह जबानी दादा - परदादा और पूरे वंश की जानकारी को प्रदान करने वाला, ऐसे मुस्लिम धर्म के अनुयायियों को मिरासी कहा जाता था और ऐसे व्यक्ति जो सनातन धर्म से संबंधित थे उन्हें भट्ट कहकर संबोधित किया जाता था, ऐसे व्यक्ति अत्यंत विद्वान होते थे|

२. मर्दाना का अर्थ मर्द होता है, भाई मरदाना जी को जीवन में कीर्तन की दात धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' ने बक्शी थी| रबाब अर्थात रब यानिकी खुदा और आब यानिकी की अमृत, जब भाई मरदाना जी रबाब बजाते थे तो रब के नाम की अमृत वर्षा होती थी|

३. भाई मरदाना जी की भूख और प्यास ने इस जगत का कल्याण किया था, जब हम कहते हैं कि भाई मरदाना डर गया तो उनके डर ने भी इस जगत को बहुत कुछ दिया था| यदि भाई मरदाना जी को प्यास नहीं लगती तो क्या गुरुद्वारा पंजा साहिब जी प्रकट होता था? क्या वली कंधारी का अंहकार टूटता था? यदि भाई मरदाना जी को भूख नहीं लगती तो पटना साहिब जी की पवित्र धरती को कैसे भाग लगते थे? भाई मरदाना जी की भूख ने उस समय के प्रसिद्ध जोहरी सालासराय और उसके नौकर अधरके को ब्रह्मज्ञानी में निरूपित कर दिया था| नूरशाह जादुगरनी को भाई मरदाना के कारण ही नूर प्राप्त हुआ था, कोड़ा राक्षस के कड़ाव ठंडे हो गए थे| भाई मरदाना जी ने केवल कीर्तन

नहीं किया अपितु गुरु पातशाहा जी ने लोक - कल्याण के अनेकों कार्य भाई मरदाना जी से करवाये थे|

---------x---------

शोध पत्र की कुंजी

१. भाई मरदाना जी और धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' की मित्रता अभिन्न थी, इन दोनों की दोस्ती ने सांझीवालता का अनुपम उदाहरण दुनिया में प्रस्तुत किया है|

२. भाई मरदाना जी और धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' की जोड़ी ने गुरमत संगीत को प्रारंभ किया था और भाई मरदाना जी गुरु घर के प्रथम कीर्तनिये के रूप में निरूपित किए गए थे|

३.भाई मरदाना जी और गुरु पातशाहा जी की जोड़ी ने ऊंच - नीच के भेद को समाप्त कर समाज को एक नई दिशा प्रदान की थी|

४. भाई मरदाना जी के जीवन चरित्र से सीखने को मिलता है कि गुरु के बहाने में रहकर कैसे जीवन व्यतीत करना चाहिए?

५. भाई मरदाना जी ने स्वयं कष्ट सहन कर हमें कष्टों को सहन करने की महत्वपूर्ण सीख दी है|

६. भाई मरदाना जी एक उंची अवस्था के मालिक थे, उन्होंने गुरु पातशाहा जी से केवल धीरज, सब्र और संतोष की दात ही मांगी थी|

७. भाई मरदाना जी ने गुरु जी के सानिध्य में रहकर अपनी बेबाक टिप्पणियों से महंत और पीर फकीरों के आडंबरों का भंडाफोड़ किया था|

८. भाई मरदाना जी की रबाब की धुनों ने जन - जागृति कर एक परमेश्वर के अर्थ को समझाया था|

९. वर्तमान समय में भाई मरदाना जी और गुरु पातशाहा जी की बाणीयों को अलग से क्रमबद्ध कर उस पर अधिक शोध करने की आवश्यकता है|

---------x---------

शोध पत्र के विषय से संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

१.इस विषय पर राष्ट्र भाषा हिंदी में अभी तक कोई शोध पत्र प्रकाशित नही हुआ है|

२.भाई बाला जी द्वारा रचित जन्म साखी में उत्तम जानकारी प्रदित की गई है|

३.सरदार गुरिंदर पाल सिंघ जी जोसन के द्वारा इस संबंध में अति उत्तम साहित्य गुरुमुखी भाषा में रचित किया गया है|

४.इस विषय पर उत्तम साहित्य की रचनाओं को लिखने की एवम् पीएचडी के लिये विद्यार्थीयों को प्रोत्साहित करने की आवश्कता है|

---------x---------

शोध पत्र का उद्देश्य

१. भाई मरदाना जी के जीवन चरित्र के विशुद्ध इतिहास को प्रचारित - प्रसारित करना|

२. इस शोध पत्र को विशेष रुप से राष्ट्र भाषा हिंदी में लिखा गया है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक इस इतिहास की जानकारी पहुंच सकें|

३. ऐसे शोध पत्रों को लिख कर भाई मरदाना जी जैसे महान गुरु सिक्खों के इतिहास को सम्मान प्रदान करना|

४. रबाब जैसे ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण साज को पुनर्जीवन प्रदान कर, रबाब बजाने की कलां में विद्यार्थीयों को निपुण कर 'गुरमत संगीत' को विशेष आयाम प्रदान करना|

---------x---------

शोध पत्र का निष्कर्ष

यह शोध पत्र मेरे जीवन का प्रथम शोध पत्र है, इस शोध पत्र को परंपरागत ऐतिहासिक विधि से लिखा गया है| इस शोध पत्र में भाई मरदाना जी के जीवन चरित्र के अनेकों आयामों को क्रम बद्ध लिख कर न्याय देने का प्रयत्न किया गया है| रबाबी भाई मरदाना जी फाउंडेशन की और से एक दिवसिय सम्मेलन का आयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण है कारण भाई मरदाना जी के विशुद्ध इतिहास को बडे पैमाने पर प्रचारित - प्रसारित करने हेतु ऐसे उपक्रमों की अत्यंत आवश्यकता है| मैं आशा करता हूं कि रबाबी भाई मरदाना जी फाउंडेशन भविष्य में भी ऐसे उपक्रमों को आयोजित करती रहेगी| ऐसे सम्मेलनों के आयोजनों से ही विश्व के समस्त विद्वानों के विचारों को अदान - प्रदान हेतु निश्चित ही एक ठोस मंच की प्राप्ती होती है|

---------x---------

<u>संदर्भ सुची</u>

१. भाई बाला जी द्वारा रचित जन्म साखी|

२. वारां भाई गुरदास जी|

३. धन्य - धन्य गुरु 'श्री ग्रंथ साहिब जी'|

४. गुगल सर्च इंजन|

५.सरदार गुरिंदर पाल जी जोसन रचित पुस्तक|

६. यु - ट्युब पर उपलब्ध 'पंथ - खालसा' के माहन इतिहासकार भाई पिंदरपाल सिंघ जी, ग्यानी इंदर पाल सिंघ जी, कथा वाचक ग्यानी अमरिक सिंघ जी इत्यादि के व्याख्यान |

७. गुरुबाणी सर्चर ऐप पर उपलब्ध साहित्य।

धन्यवाद!

शोधार्थी

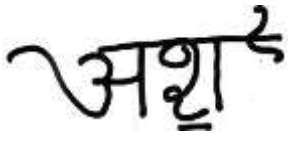

(सरदार रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श'
पुणे|
तारिख:- १८/१२/२०२१